# श्रुत पंचमी पर्व

Presentation by:
विकास छाबड़ा (जैन), इंदौर

www.JainKosh.org

जयउ धरसेणणाहो जेण महाकम्मपयडीपाहुडसेलो ।
बुद्धिसिरेणुद्धरीओ समप्पिओ पुप्फयंतस्स ॥

जिन्होंने महाकर्म प्रकृति प्राभृतरूपी शैल (पर्वत) का अपने बुद्धिरूपी शिर से उद्धार किया और पुष्पदंत आचार्य को समर्पित किया ऐसे धरसेन-आचार्य जयवंत होवें ।

www.JainKosh.org

# श्रुत पंचमी पर्व - ज्येष्ठ शुक्ल पंचमी

आचार्य पुष्पदंत एवं आचार्य भूतबली द्वारा

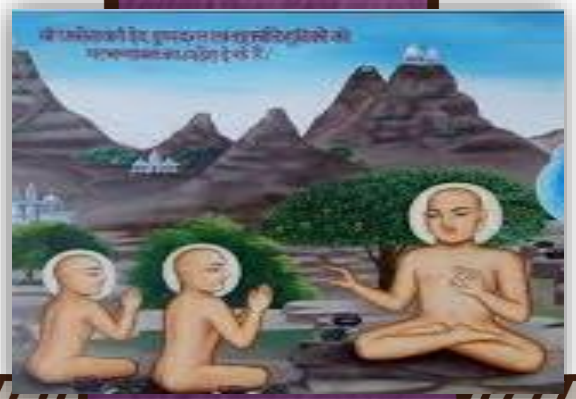

इस दिन षट्खंडागम ग्रन्थ पूर्ण लिपिबद्ध हुआ था ।

www.JainKosh.org

# षट्खंडागम ग्रन्थ

| | | |
|---|---|---|
| जीवस्थान | क्षुद्रबन्ध | बन्ध-स्वामित्वविचय |
| वेदना खंड | वर्गणा खंड | महाबन्ध |

www.JainKosh.org

लगभग इसी काल के दौरान रचा गया श्रुतस्कंध

# कषायप्राभृत

आचार्य गुणधर द्वारा रचित

ज्ञानप्रवाद पूर्व की दसवी वस्तु के तीसरे प्राभृत "पेज्ज-दोस पाहुड" के ज्ञाता

गाथा प्रमाण

- मूल में 180 गाथा प्रमाण
- चूर्णिसूत्र 6000 श्लोक प्रमाण
- उच्चारण आचार्य द्वारा उच्चारणावृत्ति 12000 गाथा प्रमाण

www.JainKosh.org

# कषायप्राभृत टीकाएँ

आचार्य आर्यमंक्षु, नागहस्ती द्वारा व्याख्यान

यतिवृषभाचार्य द्वारा चूर्णिसूत्र

वीरसेन स्वामी द्वारा जयधवल

www.JainKosh.org

# षट्खंडागम टीकाएँ

| | |
|---|---|
| आचार्य कुन्दकुन्द | • 3 खंडों पर परिकर्म टीका |
| आचार्य शामकुण्ड | • 5 खंड पर |
| आचार्य तुम्बुलूर | • 6 खंड पर |
| आचार्य समन्तभद्र | • 5 खंड पर |
| बप्पदेव गुरु | • 6 खंड पर |
| वीरसेन स्वामी | • 5 खंड पर |

www.JainKosh.org

# षट्खंडागम की प्रसिद्ध टीका : धवला

रचयिता : वीरसेन स्वामी

एलाचार्य के शिष्य

बप्पदेवगुरु कृत व्याख्या प्रज्ञप्ति टीका प्राप्त कर षट्खंडागम पर धवला टीका रची

72,000 श्लोक प्रमाण, ई. सन् 816 में पूर्ण हुई

# जयधवल

कषायप्राभृत पर जयधवल टीका

20,000 श्लोक प्रमाण

वीरसेन स्वामी के समाधिमरण के पश्चात् इनके शिष्य जिनसेन स्वामी ने 40,000 श्लोक प्रमाण टीका लिखकर इसे पूर्ण किया ।

www.JainKosh.org

| मूल ग्रन्थ | टीका |
| --- | --- |
| षट्खंडागम के प्रथम 5 खंड | धवल |
| षट्खंडागम का छठा खंड – महाबन्ध | टीका नहीं है, मूल ग्रन्थ का ही नाम वीरसेन स्वामी ने महाधवल कहा है । |
| कषायप्राभृत | जयधवल |

www.JainKosh.org

# जीवट्ठाण

जीवट्ठाण (जीवस्थान) में सत्संख्या, क्षेत्र, स्पर्शन, काल, अंतर, भाव, अल्प-बहुत्व — ऐसे आठ अनुयोग-द्वारों के द्वारा

जीव पदार्थ का गुणस्थान और मार्गणास्थान में वर्णन किया गया है ।

सम्यक्त्वोत्पत्ति चूलिका में प्रथमोपशम सम्यक्त्व से सिद्ध दशा तक का वर्णन है ।

यह धवल की 6 पुस्तकों में समाहित है ।

www.JainKosh.org

# खुद्दाबंध (क्षुल्लकबंध)

इसमें क्षुद्र अर्थात् संक्षिप्त रूप से कर्मबन्ध का प्रतिपादन किया गया है इसलिए इसे खुद्दाबंध नाम मिला है ।

इस खंड में जीवों की प्ररूपणा स्वामित्वादि ग्यारह अनुयोगों द्वारा गुणस्थान विशेषण को छोड़कर मार्गणास्थानों में की गयी है ।

यह धवल पुस्तक सात में समाहित है ।

www.JainKosh.org

# बंध-सामित्त-विचय

इसमें बन्ध के स्वामित्व की विचारणा की गयी है।

कौन-सा कर्मबन्ध किस-किस गुणस्थान में और मार्गणास्थान में सम्भव है? इसका विस्तार से विवेचन किया गया है ।

यह धवल पुस्तक आठ में समाहित है ।

www.JainKosh.org

# वेदना खंड

यहाँ वेदना का अर्थ ज्ञानावरणादि आठ कर्म लिया है ।

इसमें ज्ञानावरणादि 8 कर्मों के उत्कृष्ट, जघन्यद्रव्य संचय का स्वामी, योगस्थान, अनुभागबन्धाध्यवसान आदि का विस्तार से वर्णन है ।

इस पूरे खंड का वर्णन धवल पुस्तक 9 से 12 तक है ।

www.JainKosh.org

# वर्गणा खंड

इसमें स्पर्श, कर्म और प्रकृति इन तीन अनुयोग द्वारों के साथ बन्ध और बन्धनीय इन दो अधिकारों का विस्तार के साथ विवेचन किया गया हैं।

बन्धनीय का आलम्बन लेकर वर्गणाओं का सविस्तार वर्णन किया गया है। इसलिए इसे वर्गणाखंड यह नाम दिया गया है।

23 प्रकार की वर्गणा, कर्म की निधत्ति, निकाचित, संक्रमण, उदीरणा आदि का वर्णन

यह पूरा खंड धवल पुस्तक 13 से 16 तक है ।

# महाबन्ध

इसमें विस्तार से बन्ध का निरूपण किया है ।

इसके मुख्य चार अधिकार हैं- 1. प्रकृतिबन्धाधिकार, 2. स्थितिबन्धाधिकार, 3. अनुभागबन्धाधिकार, 4. प्रदेशबन्धाधिकार ।

इन सभी का वर्णन महाबंध की सात पुस्तकों में है ।

www.JainKosh.org

# कषायप्राभृत

इसमें केवल मोहनीय की बन्ध, उदय, सत्त्व, संक्रमण आदि विविध दशाओं का विस्तृत व्याख्यान किया गया है ।

जयधवल की कुल पुस्तकें 16 हैं।

www.JainKosh.org

# धवल ग्रंथों के प्रकाशन में आने का इतिहास

1883, सेठ माणकचंदजी, मुंबई द्वारा मूढ़बिद्री यात्रा

धवल, जयधवल आदि ग्रंथों के दर्शन, स्थिति देखी

1884, सेठ हीराचंदजी, सोलापुर द्वारा यात्रा

कर्णाटी लिपि का कुछ अंश पं. ब्रह्मसूरी शास्त्री द्वारा पढ़ा गया

प्रतिलिपि कराने का मानस बना

www.JainKosh.org

1890 के पहले पं. गोपालदासजी बरैया, सेठ मूलचंदजी सोनी, अजमेर के द्वारा यात्रा

1890 में ग्रंथों की प्रतिलिपि का कार्य प्रारंभ हुआ

परन्तु शीघ्र ही रुक गया

- कारण?
- वे प्रतियाँ सेठ मूलचंदजी अजमेर ले जाना चाहते थे ।

www.JainKosh.org

# लिपि का तात्पर्य

जिस भाषा में साहित्य लिखा गया है

जैसे “मेरा नाम शुद्धातम जैन है ।”

यह हिंदी भाषा का एक वाक्य है । इसे विभिन्न लिपियों में लिखा जा सकता है ।

| लिपि भाषा | वाक्य |
|---|---|
| हिंदी | मेरा नाम शुद्धातम जैन है । |
| अंग्रेजी | Mera naam shuddhatam jain hai. |
| गुजराती | મેરા નામ શુદ્ધાતમ જૈન હૈ । |
| तमिल | மேரா நாம ஶுத்தாதம ஜைந ஹை । |
| कन्नड़ | ಮೇರಾ ನಾಮ ಶುತ್ಧಾತಮ ಜೈನ ಹೈ । |
| मलयालम | മേരാ നാമ ശുത്ധാതമ ജൈന ഹൈ । |
| बंगाली | মেরা নাম শুত্ধাতম জৈন হৈ । |

1895, हीराचंद सेठजी के द्वारा प्रयास, दान-राशि इकट्ठी की गयी

1896, प्रतिलिपि के लिए पं. ब्रह्मसूरी, पं. गजपति शास्त्री, मिरज को नियुक्त किया गया

थोड़े समय में पं. ब्रह्मसूरी का निधन हो गया

परन्तु पं. गजपति शास्त्री के द्वारा अनवरत प्रतिलिपि होती रही

www.JainKosh.org

लगभग 16 वर्षों में 1910 में धवल, जयधवल की देवनागरी लिपि में प्रतिलिपि पूर्ण हो गयी और स्थानीय विद्वानों द्वारा कनाड़ी लिपि में भी एक प्रतिलिपि हो गई ।

सेठ हीराचंद द्वारा भट्टारकों से महाधवल की प्रतिलिपि और शास्त्र अनेक स्थानों पर रखने का निवेदन किया ।

1918 के पूर्व, महाधवल की पं. नेमराज सेठी द्वारा कनाडी लिपि में प्रतिलिपि पूर्ण हो गयी परन्तु हिंदी के लिए वहां के पंच तैयार नहीं हुए ।

www.JainKosh.org

1922, सेठ हीराचंदजी के प्रयासों से पं. लोकनाथ शास्त्री द्वारा महाधवल की देवनागरी लिपि भी पूर्ण हो गयी ।

इस प्रकार लगभग 26 वर्षों में धवल, जयधवल, महाधवल ग्रंथों की प्रतिलिपि पूर्ण हो गयी । इस कार्य में लगभग 20,000 रु. का व्यय हुआ ।

www.JainKosh.org

# शास्त्र मूढ़बिद्री से बाहर कैसे आये?

पं. गजपति उपाध्याय द्वारा गुप्तरूप से धवल, जयधवल की कनाडी प्रतिलिपि

- धर्मपत्नी लक्ष्मीबाई की मदद जिनकी तीव्र भावना थी कि इन ग्रंथों का प्रचार-प्रसार हो ।

1915, प्रतिलिपि देने के लिए हीराचंदजी सोलापुर से मिले ।

सेठजी ने माणकचंदजी को भी लेने से मना कर दिया ।

पं. गजपति फिर लाला जम्बूप्रसादजी सहारनपुर से मिले । लालाजी ने प्रतिलिपियाँ ले ली ।

पं. गजपति नागरी लिपि करने वाले थे, पर उनका पुत्र बीमार हुआ, फिर पत्नी और स्वयं अस्वस्थ होकर उनका निधन 1923 में हो गया ।

लालाजी ने पं. विजयचंद्रय्या, पं. सीताराम शास्त्री को बुलाकर नागरी लिपि करा ली । (1916-1923)

1924, पं. लोकनाथ शास्त्री द्वारा इसका मिलान करवा लिया गया ।

www.JainKosh.org

इसी दौरान पं. सीताराम शास्त्री ने एक प्रतिलिपि और कर ली या जो रफ़ notes थे उस पर से उन्होंने एक प्रतिलिपि तैयार कर ली और अनेक प्रतिलिपि करके विभिन्न स्थानों पर दी ।

- इंदौर, सागर, आरा, कारंजा, अजमेर, मुंबई, झालरापाटन, सिवनी, ब्यावर, दिल्ली आदि

www.JainKosh.org

# प्रथम पुस्तक का प्रकाशन

- 1933, इटारसी में अ. भा. दि. जैन परिषद् का अधिवेशन,
- भेलसा निवासी सेठ लक्ष्मीचन्द्रजी द्वारा दान राशी
- बै. जमनाप्रसादजी द्वारा हीरालालजी पर कार्यभार
- प्रतिलिपि प्राप्त करना?
- सहायक
  - पं. हीरालालजी शास्त्री, झाँसी
  - पं. फूलचंद्र शास्त्री

www.JainKosh.org

# आधुनिक प्रकाशन - धवल

## प्रथम प्रकाशन प्रयास

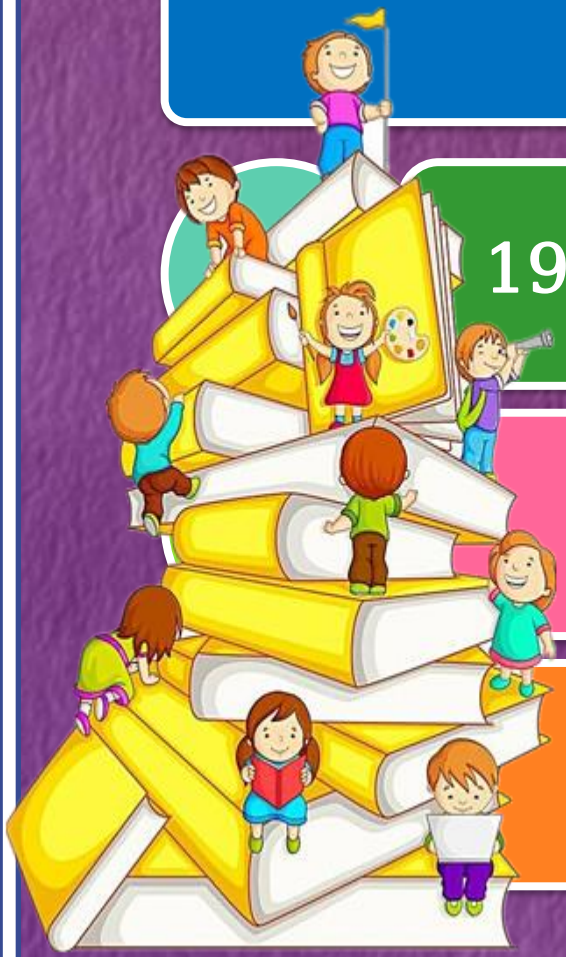

1933, पं. हीरालालजी, पं. हीरालालजी शास्त्री, पं. फूलचंदजी शास्त्री

1939, धवल पुस्तक 1 प्रकाशित हुई

1956, धवल पुस्तक 16 (अंतिम भाग) प्रकाशित हुआ

# आधुनिक प्रकाशन - जयधवल

संपादन, अनुवाद - पं. फूलचंदजी शास्त्री, कैलाशचंदजी शास्त्री, पं. महेंद्रजी शास्त्री

- प्रथम पुस्तक, 1944
- 16वी पुस्तक, 1988 (लगभग 44 वर्ष)

भारतीय दिगंबर जैन संघ मथुरा द्वारा प्रकाशित

www.JainKosh.org

# महाबंध प्राप्ति के प्रयास

- 1936, समिति बनाई गई जिसका प्रमुख बनाया सेठ श्रीसखाराम दोशी, सोलपुर, सदस्य प. सुमेरुचन्द्रजी दिवाकर आदि
- सेठजी द्वारा 2 बार मूढ़बिद्री यात्रा
- समिति के कुछ सदस्यों का विचार न्यायालय जाने तक का हो गया
- पंडितजी का अंत:विचार – न्यायालय नहीं, प्रेमपूर्ण व्यवहार से ही कार्य होगा
- कुछ समय में सेठजी की स्वर्गवास हो गया

www.JainKosh.org

# अनुकूल परिस्थिति का निर्माण

- 1939, श्रमणबेलगोला के मस्तकाभिषेक का अवसर
- भट्टारक श्री चारुकीर्तिजी चिंतित
- जैन गजट और जैन राजनीतिक समिति के मंत्री के रूप में पंडितजी ने पत्र-आंदोलन किया ।
- ये लेख आदि स्थानीय पत्र 'विवेकाभ्युदय' में (कनाडी) छपते थे । इससे स्थानीय प्रांतीय बंधुओं के साथ स्नेह-संबंध बने ।
- मस्तकाभिषेक का समय आया, लाखों लोगों के साथ बड़े सानंद संपन्न हुआ । पंडितजी भी अपने पिताजी के साथ गए ।

www.JainKosh.org

# मधुर संबंध बनना

- वहाँ स्वामीजी ने पंडितजी का परिचय दिया, बहुत गुणगान किया ।
- स्वामीजी ने फल देकर कहा – फलेन फलं आलभेत् अर्थात् इन फलों से तुम्हें महाफल मिले ।
- अर्थ व्यवस्था के निमित्त सेठ हुकमचंदजी के स्थान पर मंजैय्या हेगड़े, धर्मस्थल और प्रान्त के विशेष रघुचन्द्र बल्लाल, मेंगलोर के साथ मीटिंग हुई ।

www.JainKosh.org

- पश्चात् यात्रा के निमित्त मेंगलोर गमन ।
- बल्लालजी से अचानक मुलाकात हुई । उनसे ग्रन्थ संबंधी बात कही । भाषण कराने का निवेदन, पंडितजी ने स्वीकार किया ।
- मूढ़बिद्री की यात्रा: त्रिलोकचूडामणि मंदिर (चन्द्रनाथ वसदी) के दर्शन ।
- इसी दौरान वयोवृद्ध नागराज श्रेष्ठी से मुलाक़ात हुई । उनसे ग्रन्थ संबंधी निवेदन । उनके शुभ वचन ।

  –हेगड़ेजी और बल्लालजी को लाने का निवेदन ।

www.JainKosh.org

# हेगड़ेजी, बल्लालजी से निवेदन

- अगले ही दिन पंडितजी धर्मस्थल पहुंचे, हेगड़ेजी से बहुत आग्रह करके उन्हें मूढ़बिद्री चलने के लिए मनाया ।
- धर्मस्थल से वेणुर होते हुए जा रहे थे, वहां बाहुबली भगवन की विशाल प्रतिमा है । वहीं सेठ हुकमचन्दजी भी मिले । उनसे भी मूढ़बिद्री पहुँचने का निवेदन किया ।
- फिर बल्लालजी से मिलाने मेंगलोर गए । उनसे चर्चा । वे सहर्ष तैयार हो गए । उनकी मोटर में रवाना हुए । तब तक हेगड़ेजी और सेठजो पहुँच चुके थे ।

www.JainKosh.org

# त्रिलोकचूड़ामणि मंदिर में सभा

- उसी त्रिलोकचूड़ामणि मंदिर के प्रांगन में सभा रखी गयी थी । अध्यक्ष: सेठ हुकमचन्दजी ।
- भ्रम निवारण: वहाँ के लोगों में ठेस थी कि पत्र में यह प्रकाशित किया गया है कि ग्रंथों का विक्रय करना चाहते हैं ।
- पंडितजी ने कहा - जिन लोगों के पूर्वजों ने त्रिलोक चूड़ामणि चैत्यालय जैसा विशाल जैन मंदिर बनाया, धर्म सेवा के उज्जवल कार्य नि:स्वार्थ भाव से संपन्न किए, उनके विषय में दूषित कल्पना करना तथा मिथ्या प्रचार करना ठीक नहीं है ।

www.JainKosh.org

# सभी की स्वीकृति

- पंडितजी का भाषण
- प्रतिलिपि देने की स्वीकृति । लिखित में प्रस्ताव

www.JainKosh.org

# फिर विपरीत परिस्थिति का निर्माण

- परंतु एक समाचार पत्र में विपरीत समाचार दिए गए ।
- पंडितजी को एक दक्षिण के प्रमुख का पत्र — 'देखते हैं कौन देता है' ।
- कानूनी कार्यवाही होने तक की तैयारी हो गयी ।
  - तब ब्र. जीवराज दोषी, मुनि समन्तभद्र महाराज के प्रयास से शांत हुआ ।

www.JainKosh.org

# पुनः प्रयास

- दिसम्बर 1941 में मस्तकाभिषेक के फण्ड संबंधी मीटिंग में बेंगलोर गए ।
- यहाँ से मूढ़बिद्री गए (सभी के साथ, हेगड़ेजी, बल्लालजी, जिनराज हेगड़े आदि ) । सब अपने अपने घर कार्यवश चले गए । पंडितजी अकेले मूढ़बिद्री पहुंचे ।
- जिनभक्ति मात्र सहारा ।

www.JainKosh.org

# 30 दिसम्बर, 1941

- 3 दिन के पश्चात् व्यवस्थापक बंधु श्री धर्मपालजी श्रेष्ठी ने महाबंध शास्त्र की ताड़पत्रीय प्रति उपलब्ध कर दी।
- इसके पश्चात् लोकनाथजी शास्त्री के द्वारा प्रतिलिपि होती रही
- 30 दिसम्बर 1942 को प्रतिलिपि का कार्य पूर्ण हो गया ।

www.JainKosh.org

# बीच में अनेक बाधाएं

- हेगड़ेजी का विशेष सहयोग । उत्तर भारत के विद्वानों के हेगड़ेजी को विपरीत पत्र । हेगड़ेजी के सुन्दर उत्तर ।
- उन्होंने लिखा: आप भय ना करें। ग्रंथ प्रकाशन के विषय में कोई भी बाधा ना आएगी। प्रतिलिपि का कार्य आपकी इच्छा अनुसार होता रहे; इस पर में विशेष ध्यान रखूंगा ।
- सारा द्रव्य सेठ गुलाबचंद्रजी हीराचंदजी सोलापुर से प्राप्त हुआ ।

www.JainKosh.org

# अनुवाद, प्रकाशन

- ब्र. जीवराजजी के परामर्श आदि ।
- ज्ञानपीठ काशी से प्रकाशन, महेंद्रकुमारजी न्यायाचार्य का सहयोग
- 1945 में प. वंशीधरजी शास्त्री ने अनुवाद देखा । संशोधन के सुझाव दिए ।
- पं. हीरालालजी शास्त्री, फूलचंदजी शास्त्री ने सुझाव दीये ।
- प्रथम पुस्तक का प्रकाशन : 1947

www.JainKosh.org

# आधुनिक प्रकाशन - महाबन्ध

महाबन्ध का संपादन, अनुवाद पं. सुमेरुचंदजी दिवाकर एवं पं. फूलचंदजी शास्त्री द्वारा होकर प्रकाशित हुआ।

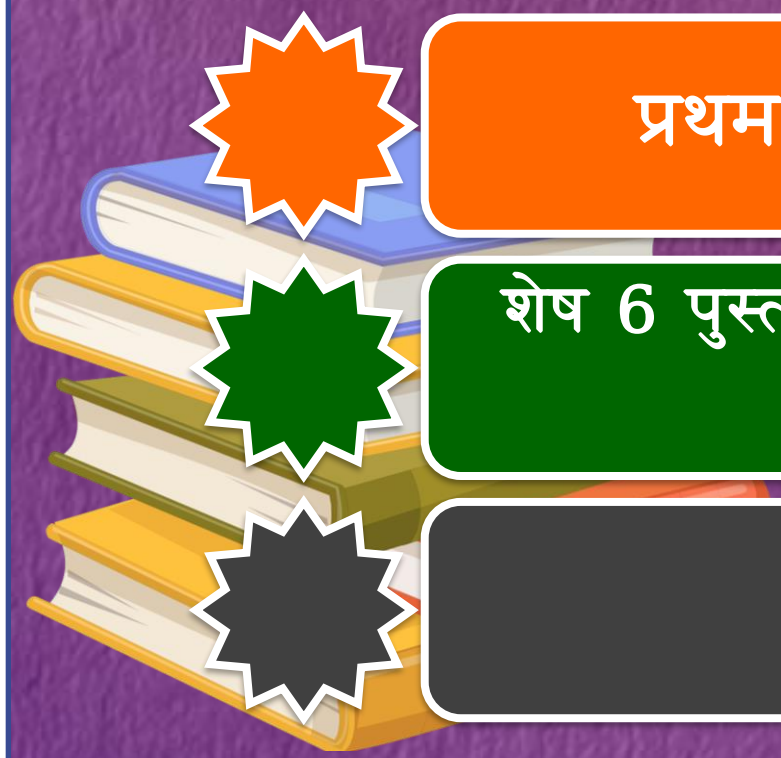

प्रथम पुस्तक 1947 – संपादक: पं. सुमेरुचंदजी दिवाकर

शेष 6 पुस्तकें पं. फूलचंदजी शास्त्री द्वारा संपादित । इनमें से प्रथम 1953 में प्रकाशित हुई।

1958, कुल 7 पुस्तकों में पूर्ण

इस प्रकार 1883 से 1988 तक लगभग 105 वर्षों में धवल, महाधवल, जयधवल ग्रन्थ आज हमें प्राप्त हुए हैं ।

| ग्रन्थ | पुस्तक संख्या |
|---|---|
| धवल | 16 |
| महाबन्ध | 7 |
| जयधवल | 16 |
| कुल | 39 |

www.JainKosh.org
Designed by bhatree